

से अपना बीमा कराने वाले को मिलता है, बीमा-पत्र।

पाली स्त्री. (देश.) 1. बारी, पारी 2. प्राचीन भारत की एक प्रसिद्ध भाषा जो गौतम बुद्ध के समय संपूर्ण भारतवर्ष के साथ-साथ बाह्यलीक, बर्मा तथा सिंहल आदि देशों में भी बोली और समझी जाती थी 3. अलग-अलग कार्य करने का समय 4. पंक्ति, श्रेणी **वि.** (तद्.) 1. पालन करने वाला 2. रक्षा करने वाला, रक्षक।

पालीवाल पुं. (देश.) 1. गौड़ ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि 2. गड़रिया प्रजाति के लोग भी कहीं-कहीं इस उपाधि का प्रयोग करते हैं।

पालेज स्त्री. (फा.-पालीज़) 1. साग-तरकारी की खेती 2. खरबूजा, तरबूज की खेती।

पालो पुं. (तद्.) 1. पल्लव, पत्ता 2. पाँच रुपए भर का बाट या तौल-सुनार।

पाल्य वि. (तत्.) जो पालन किए जाने योग्य हो।

पाल्लव वि. (तत्.) पल्लव का, सरोवर का, तालाब संबंधी।

पाल्लविक वि. (तत्.) फैलने वाला, प्रसरणशील।

पाव पुं. (तद्.) 1. चौथाई भाग, चतुर्थांश 2. एक सेर का चौथाई भाग 3. एक किलो का चौथाई भाग, 250 ग्राम।

पावक पुं. (तत्.) 1. अग्नि 2. अग्निदेव 3. सूर्य 4. वरुण 5. तपस्वी 6. चित्रक/चीता नामक वृक्ष 7. (पद्य आदि में) तीन की संख्या 8. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, मगण, भगण और गुरु के योग से 10 वर्ण होते हैं **वि.** (तद्.) 1. पवित्र करने वाला **वि.** (देश.) पाने वाला, आदाता।

पावक-मणि पुं. (तत्.) सूर्यकांत मणि, आतशी शीशा।

पावका स्त्री. (तत्.) सरस्वती।

पावकात्मज पुं. (तत्.) पावक का पुत्र, कार्तिकेय।

पावकि पुं. (तत्.) पावक का पुत्र, कार्तिकेय।

पावकी स्त्री. (तत्.) 1. अग्नि की स्त्री 2. सरस्वती।

पावती स्त्री. (तद्.) किसी वस्तु या प्रपत्र के प्राप्त होने की लिखित सूचना, प्राप्ति का स्वीकार पत्र, रसीद।

पावदान पुं. (फा.-पाएदान) [देश. पाँव+फा. दान] 1. ऊँचे यानों या सवारियों में वह अंग या स्थान जिस पर पैर रखकर उन पर सवार हुआ जाता है जैसे- रेलगाड़ी या घोड़ागाड़ी का पावदान 2. मेज के नीचे रखी जाने वाली वह चौकी जिस पर कुरसी पर बैठने वाले पैर रखते हैं 3. जटा, मूँज, सन अथवा धातु के तारों से बना वह चौकोर टुकड़ा जो कमरों के दरवाजे पर पैर पोंछने के लिए रखा जाता है।

पावन वि. (तत्.) 1. पवित्र करने वाला, दोषों, दुर्गुणों अथवा पापों से छुड़ाने वाला उदा. मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन-तुलसी 2. पवित्र पुं. (तत्.) 1. पवित्र करने की क्रिया, शुद्धि 2. अग्नि, पावकाग्नि 3. विष्णु, प्रभु, परमात्मा 4. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, नगण, जगण, जगण और सगण के योग से 15 वर्ण होते हैं तथा 8-7 पर यति होती है **विलो.** अपावन।

पावनता स्त्री. (तत्.) पवित्रता, पावन होने की अवस्था या भाव।

पावनताई स्त्री. (तद्.) पवित्रता।

पावनत्व पुं. (तत्.) पवित्रता।

पावनध्वनि पुं. (तत्.) 1. शंखनाद 2. शंख।

पावना पुं. (देश.) 1. दूसरे का रुपया, धन आदि प्राप्त करने का अधिकार 2. वह रुपया, धन जो दूसरे से पाना हो 3. दूसरे से रुपया पाने का अधिकारी व्यक्ति, लेनदार **स.क्रि.** प्राप्त करना।

पावनि पुं. (तत्.) पवन के पुत्र हनुमान।

पावनी वि. (तद्.) दूसरे से रुपया प्राप्त करने की अधिकारिणी **स्त्री.** (तत्.) 1. हड़, हर 2. तुलसी 3. गाय, गौ 4. गंगा नदी।